ISSN:2583-8849



आशा पाण्डेय ओझा 'आशा'
उदयपुर, राजस्थान

दीपावली मंगल कामना गीत

दीप जलाओ जगमग- जगमग,
जगमग दुनिया सारी हो।
भीतर भर लें एक उजाला,
दीवाली उजियारी हो।।

चार दिशाएं चम-चम चमके,
हर एक मुखड़ा सुख से दमके।
दस्तक देती खुशियाँ डोले,
हर एक आँगन हँस-हँस बोले।
कहीं न विपदा कोई ठहरे,
न ही कोई दुखियारी हो।

भेद भूला कर मन के सारे,
दीप जलाएँ द्वारे-द्वारे।
भीतर रखकर राम सिया को
विस्तृत कर लें आज हिया को।
भाव सनातन सुंदर, निर्मल
और सदा हितकारी हो

मिलकर सारी बहना-भाई,
आओ बाँटे आज मिठाई।
जहाँ दुखों ने बैठक डाली,
उसकी करदें आज विदाई।
कच्ची-बस्ती,झुग्गी,झूँपे,
अमा कहीं न भारी हो।

सपने,सागवान से बोये थे

आँखों के कानन में सपने,सागवान से बोये थे,
सच का बढई काट गया हम,हिलकी भर भर रोये थे।

खाद ऊर्जा वाली डाली,श्रम जल भी तो सींचा था।
बची रहे ये नन्हीं कोंपल,तार धैर्य का खींचा था ।
रौंद गया रे समय मवेशी,
बेसुध से हम सोये थे।
आँखों के कानन में सपने,सागवान से बोये थे।
सच का बढई काट गया हम,हिलकी भर-भर रोये थे।

कोरे-कोरे कच्चे- कच्चे,पाँव थड़ी भर कर पाये।
आशाओं की पकड़ ऊँगली।
डग दो डग ही भर पाये।
आभास कहाँ था यूँ गिरने का,
आसमान में खोये थे।
आँखों के कानन में सपने,सागवान से बोये थे,
सच का बढई काट गया हम,हिलकी भर-भर रोये थे।

नर्म मुलायम ऐसे सपने,रेशम के ज्यों लच्छे थे।
याद बहुत आते हैं सपने,सपने कितने अच्छे थे।
नियति-निगोड़ी तोड़ गई जो,मोती आस पिरोये थे।

आँखों के कानन में सपने,सागवान से बोये थे।
सच का बढई काट गया हम हिलकी भर- भर रोये थे।

ISSN:2583-8849

भूल कर वेदना साध संगीत को

भर रहा है समय प्राण में
गीत को।
भूल कर वेदना साध संगीत को।।

भोर का शीश है रेत के पाँव में,
गंध सौंधी उड़े खेत में,गाँव में।
खग सभी कोटरों से निकलने लगे,
धूप के लाड़ से वे मचलने लगे।
और अँगूठा दिखाने लगे शीत को।।
भर रहा है समय प्राण में गीत को...

खेजड़ी के तले चाँद क्यूँ रुक गया,
ये गगन भी धरा की तरफ़ झुक गया।
मंद सी पड़ गई साँझ की वात भी,
केसरी-केसरी घुल रही रात भी।
बात मन की कहो आज मन मीत को।।
भर रहा है समय प्राण में गीत को.....

ओस की बूँद जो पुष्प पर झर गई,
पाँखुरी-पाँखुरी नेह से भर गई।
लहलहाती हुई धान की बालियाँ,
झुंड में घूमती फिर रही तितलियाँ।
गुनगुनाती हुई प्रेम की रीत को।।
भर रहा है समय प्राण में गीत को....

तारीका बिछ गई रात के खाट पर,
चाँद बैठा हुआ मेघ की टाट पर।
साँवली-साँवली यामिनी बढ़ रही,
सीढियाँ-सीढ़ियाँ व्योम पर चढ़ रही।
लिख रही है दिशाएँ सभी प्रीत को।।

भर रहा है समय प्राण में गीत को...

काश!समझ यह तुम पाते

मात-पिता का होना क्या है,काश!समझ यह तुम पाते।

मात-पिता का रोना क्या है,
काश!समझ यह तुम पाते ।।

तुमको सींचा पल-पल जिसने,
बाँहों भर-भर प्यार
दिया,
दिया निवाला मुख का अपने,
प्रतिक्षण खुद को वार दिया।
किश्तों-किश्तों सोना क्या है,काश! समझ यह तुम पाते।
मात-पिता का होना क्या है,काश!समझ यह तुम पाते।

अपने सपनों की लाशों पर,महल तुम्हारे चिनवाए।
मार-मार कर मन की मन में,वस्त्र तुम्हारे बुनवाए।
भरी जवानी बूढ़ा होना, काश! समझ यह तुम पाते।
मात-पिता का होना क्या है,काश!समझ यह तुम पाते ।।

देह शिथिल जब आज पड़ी है,साथ तुम्हारा माँग रहे।
वृद्धाश्रम की खूँटी पर क्यों,बोझ समझकर टाँग रहे।
मात-पिता को खोना क्या है, काश! समझ यह तुम पाते।
मात-पिता का होना क्या है, काश! समझ यह तुम पाते ।।

ISSN:2583-8849

डाक लिये फिर आये दद्दा

डाक लिये फिर आये दद्दा,
जाने कितने सालों में।
एक खुशी आँखों में उतरी ,
और साथ ही गालों में।

इतने दिन थे कहाँ पे दद्दा-
डाक नहीं क्यों लाए थे?
देखा कितना मारग हमने ,
आप नहीं पर आए थे।
न ही मिला था कागद कोई ,
आँगन वाले आलों में ।
डाक लिये फिर आये दद्दा,
जाने कितने सालों में।

मीठे-मीठे शब्दों में जो,
मिल जाता था प्यार घुला ।
भुआ-चाचा,मामा-मौसी,
पत्र किसी का नहीं मिला।
बोलो दद्दा चिट्ठी थी क्या ,
रखी कहीं पर तालों में ।
डाक लिये फिर आये दद्दा,
जाने कितने सालों में।

कैसे आता, किसकी लाता-
डाक बताओ अब मुन्नू?
कौन लिखेगा किसको कागद,
आप बताओ अब मुन्नू?
बुड्ढे-बच्चे उलझ गए सब ,
मोबाइल के जालों में ।
डाक लिये फिर आये दद्दा,
जाने कितने सालों में।

सूरज देता दस्तक फिर-फिर

सूरज देता दस्तक फिर-फिर,
चिड़िया बेल बजाती है।
जागो-जागो बाहर आओ,
ताज़ी हवा बुलाती है।।

सींच गया है आकर दुर्वा,
ओस का माली चुपके से।
पात-पात पर लड़ मोती की,
किसने डाली चुपके से?
फूल खिले हैं सुंदर-सुंदर,
कली-कली मुस्काती है।

छत पर कितने मोर खड़े हैं,
पंख पसारे नाच रहे।
डाली-डाली उड़ते तोते
लगे कविता बाँच रहे।
भौरों की सुन गुनगुन- गुनगुन,
झुरमुट शीश हिलाती है।

चली खेत को रंभाती सी,
ग्वाले संग-संग गैया भी।
रात किनारे खड़ी हुई थी,
चली पुनः वो नैया भी।
कोयल कबकी छोड़ बिछौना,
कुहुक-कुहूक कर गाती है।

उठ कर आओ बाहर देखो,
कितनी सुंदर दुनिया है।
गोद चढी उषा के आई,
उजल-उजली मुनिया है।
उतर-उतर कर आँगन अपने,
रुण-झुण पाँव बजाती है।

ISSN:2583-8849

भर रहा है समय प्राण में गीत को

भर रहा है समय प्राण में गीत को,
भूल कर वेदना साध संगीत को।
भोर का शीश है रेत के पाँव में ,
गंध सौंधी उड़े खेत में गाँव में।
खग सभी कोटरों से निकलने लगे,
खोल कर पँख वे फिर मचलने लगे।
फाँदने वे लगे दर्द की भीत को।।
भर रहा है समय प्राण में....

खेजड़ी के तले चाँद क्यूँ रुक गया?
ये गगन भी धरा की तरफ़ झुक गया।
मंद सी पड़ गई साँझ की वात भी,
केसरी-केसरी घुल रही रात भी।
बात मन की कहो आज मन मीत को।
भर रहा है समय प्राण में....

ओस की बूँद जो पुष्प पर झर गई,
पाँखुरी-पाँखुरी नेह से भर गई।
लहलहाती हुई धान की बालियाँ,
झुंड में घूमती फिर रही तितलियाँ।
गुनगुनाती हुई प्रेम की रीत को।।
भर रहा है समय प्राण में....

तारीका बिछ गई रात के खाट पर,
चाँद बैठा हुआ मेघ की टाट पर।
साँवली-साँवली यामिनी बढ़ रही,
सीढियाँ-सीढ़ियाँ व्योम पर चढ़ रही।
लिख रही है दिशाएं सभी प्रीत को।
भर रहा है समय प्राण में....

सारा पीहर छूट गया

एक पिता ने अँगुली छोड़ी,
सारा पीहर छूट गया।
गुड्डे-गुडडी वाली ताकें,
बचपन का घर छूट गया।

सावन में संदेश भिजाना,
तीज-तिवारों पर बुलवाना।
और कभी खुद लेने आना,
मैके का वो आना-जाना।
चार दिनों का जो मिलता था,
वो भी अवसर छूट गया।

एक पिता ने अँगुली छोड़ी.....

पूछा करना बातें सारी,
हास-ठिठोली रातें सारी।
बहनों का वो संगम होना,
चहका करता कोना -कोना।
नेह नीर जो भर-भर देता,
वो ही सरवर छूट गया।
एक पिता ने अँगुली छोड़ी,
सारा पीहर छूट गया।

आशीषों से हाथ फिराना,
करना देकर सीख रवाना।
घड़ी-घड़ी के फोन वो सारे,
हो गये कैसे मौन वो सारे।
बीत गए क्षण हँसते-गाते ,
यह आँचल तर छूट गया।
एक पिता ने अँगुली छोड़ी...

ISSN:2583-8849

द्वेष जनित जब कंठ हुआ है।

द्वेष जनित जब कंठ हुआ है।
गीत प्रीत के गाऊँ कैसे?
पाँवों में बारूद बिछा है,
प्रीतम तुम तक आऊँ कैसे?
स्वर कोयल के लुप्त हुवे हैं ,
राग प्रीत के सुप्त हुवे हैं ।
वार शत्रु के गुप्त हुवे हैं ,
कितने भाव विलुप्त हुवे हैं ।
मन के विचलित इस मौसम में,
कुंतल-फूल सजाऊँ कैसे?
द्वेष जनित जब कंठ हुआ है....

कल तक जिनने पत्थर ताने,
आज लगे बंदूक उठाने।
रोज मृत्यु है अब सिरहाने,
बर्फ़ लगा है पाँव जलाने।
उजड़ रही है केसर क्यारी,
खुद को आज सजाऊँ कैसे?
द्वेष जनित जब कंठ हुआ है.....

पीड़ाओं का बोझा ढोता,
पग- पग पर यह खण्डित होता।
अपनी गरिमा जग में खोता,
भारत दिखता मुझको रोता।
पाठ घृणा का सीख रहे जो,
उनको प्रेम पठाऊँ कैसे?
द्वेष जनित जब कंठ हुआ है...

थोड़ी-थोड़ी मस्ती उसमें

थोड़ी-थोड़ी मस्ती उसमें, थोड़ी-थोड़ी रोती है।
लड़की से वो,मम्मी होती,
फिर वह दादी होती है।।

प्रतिबंधों के साथ पले, हर कदम फूँक कर रखती है।
आगे पीछे डर का साया,
सोच-सोच कर चलती है।
गंदी नजरे जब-जब घेरे,
खुद को मलमल धोती है।
थोड़ी-थोड़ी मस्ती उसमें....

समझ जनम से साथी बनती,
ऐसे पाली जाती है।
जाने कितने साँचो में वह ,
हर दिन ढाली जाती है।
बदल-बदल कर रूप नये नित,
हर रिश्ते में होती है।
थोड़ी-थोड़ी मस्ती उसमें.....

दो पाटों में पिसती रहती,
मैके और ससुराल के।
ढक लेती वो दोनों को ही,
चुप्प की चादर डालके।
खुशियों की वह झालर बुनती,
हँसकर दुख को धोती है।
थोड़ी-थोड़ी मस्ती उसमें...

ISSN:2583-8849

धूप को छाँहो बिठाने

धूप को छाँहो बिठाने छ
ा गये ज्यों बादले फिर ।
खेत को पानी पिलाने
आ गये ज्यों बादले फिर ।।

बादले जैसे पिता हों,
लौट आए हैं कमाकर।
की समंदर के हमाली,
देनगी लाये जमा कर।
खेजड़ी या थोर-कांकड,
कूप,नदिया,ताल,भाखर।
चूमते हैं शीष सबका,
गोद में सबको रमाकर ।
खुश दिखाई दे रहे हैं,
भाग सबको निज थमा कर।
धूप को छाँहो बिठाने,
छा गये ज्यों बादले फिर ।

गलतियाँ कैसे हुई हैं?
डाँटते ज्यों गर्जना में ।
क्रोध के मारे करी हों ,
लाल आँखे तर्जना में।
पूछते हैं क्या सिखा कर ,
मैं गया था वर्जना में ।
याद रखना था तुम्हें सब,
जो सिखाया सर्जना में।
क्यों अमल करते नहीं तुम,
मैं करूँ जो बात हितकर ।
धूप को छाँहो बिठाने,
छा गये ज्यों बादले फिर ।

आप डाँटे आप रोये,
हो गया अंतस विकल है ।
है मगर दिखता नहीं जो ,
प्रेम कैसा यह विरल है?
बाप भी तो माँ सरीखा,
भाव-भीना औ,सरल है।
झाँक कर भीतर कभी तुम,
देखना कितना तरल है।
क्रोध को रख कर किनारे,
फिर लुटाता प्यार घिर- घिर।

धूप को छाँहो बिठाने
छा गये ज्यों बादले फिर..